



स्टाफ क्लब, सी एस आई आर — आई एच बी टी, पालमपुर वर्ष 7 अंक 2 26 जनवरी 2014

आमुख

मंथन हमारे स्टाफ क्लब की पत्रिका है, इसका 20वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। आपके अन्दर विद्यमान वे प्रतिभायें, जिन्हें आप बोलकर या अन्य किसी रूप में व्यक्त नहीं कर सकते आप उन्हें मंथन के माध्यम से लघु लेख व कथा, कलाकृति, रेखाचित्र, कविता व अन्य किसी भी रूप में व्यक्त कर सकते हैं तथा छिपी प्रतिभा को निखार सकते हैं।

"मंथन की भावना है-भावनाओं का मंथन।"

स्टाफ क्लब के सभी सदस्यों एवं उनके परिजनों से निवेदन है कि वे मंथन के आगामी अंकों के लिए प्रविष्टियां देने की कृपा करें ताकि मंथन का अगला अंक समय से निकाला जा सके। भाषा हिन्दी या अंग्रेजी हो सकती है।

इस अंक में प्रविष्टियां देने वालों व सहयोग प्रदान करने वालों का स्टाफ क्लब सदैव आभारी रहेगा।

संपादक



* * : विषय सूची : * *

SI. No.	Topic	Name	Page
			No.
1.	SOME INTERESTING FACTS	Anil Sood	1
	ABOUT BAMBOOS		
2.	THE BLUE-FRONTED	Pabitra Gain	2
	REDSTART		
3.	WHAT ARE GENES!!!: QUEST	Som Dutt	3
	OF A CHILD		
4.	AMAZING DOCTOR FISH	Soumil	4
5.	क्यों	रीना शर्मा	5
6.	मैं डरता हूँ	उदित शर्मा	6
7.	मेरी यादगार पिकनिक	शैवी उनियाल	7-8
8.	मेरी मैगी सबकी मैगी	रिधिमा ठाकुर	9
9.		Dhanvi	10
10.		Samagya	. 11
11.		Brahmi	
12.	PAINTING	Vihaan	12
13.		Ani	
14.		Shreya	13
15.		Samridhi	
16.		Trisha	14

* * : SOME INTERESTING FACTS ABOUT BAMBOOS

- Bamboo comprise largest woody grasses (up to 40 mtrs).
- 1250 species within 75 genera.
- Provides employment to 2.5 billion people directly or indirectly.
- Approximately 1500 recorded commercial applications mostly in Asia.
- Shows fastest growth up to 120 cms. in 24 hours.
- An acre of bamboos can fix approximately 25 metric tonnes of atmospheric Carbon dioxide per year.
- Bamboo are evergreen, frost resistance and largely untroubled by pests and diseases.
- Can survive under extremes of temperatures (tropical to temperate 14,000 ft. and at 15°C 25°C).
- Sustainably harvested and Annually Renewable.
- Very effective as removing metals and other toxic substances from soils and water.
- Bamboo has a tensile strength of 28,000 per sq. inch. Vs. 23,000 for steel.
- Bamboo structures are earthquake proof.
- A truly renewable resource bamboo ply for wall panelling and floor tiles, pulp for paper making briquettes for fuel, raw culms for house construction and concrete reinforcements and handicrafts, charcoal, activated carbon, edible shoots, candies and wine/beer etc.
- A peerless erosion control agent its net like anastamosing root system creates an effective mechanism for watershed protection, stitches soil along fragile river banks.
- Bamboo leaves have about 6% silica contents.
- Bamboo leaves make excellent fodder for milch cattle during winter months.
- Bamboo shoots are edible and are rich in proteins, fibre and low in ash. Also lower cholesterol in the blood.
- Some Bamboo species (Bambusa bambos) produce calcium goblets which are used in Ayurvedic and Chinese medicines.
- Unique in having clumped (Sympodial) tropical varieties and spreading (Monopodial) types.
- Flowering cycles are fixed for each species (5-130 years) after attaining a certain physiological age.
- Flowering of two types: a) Sporadic (a few culms in a clump flower at regular intervals) and b)
 Gregarious (all the clumps flower simultaneously).
- The entire growth of culms in terms of length and girth is completed in one growing season.
- Bamboos because of differential shapes sizes and colours of leaves and culms are exquisite component of urban landscapes.
- Bamboos also contain Germanium, which reverses aging process in cells.
- Thomas Edison used bamboo filament in his first light bulbs.
- Bamboo clumps survived radiation of 1945 nuclear bombing at Hiroshima. Japan.
- Beautiful Pandas of China survive exclusively on young shoots and twigs of bamboos.
- Being in a Bamboo grove a favourite dwelling place of Lord Buddha restores calmness and stimulates creativity.
 - A Wonder of Nature Strong, Versatile yet Humble!
 - Enjoy watching bamboos swaying in strong winds yet holding feet in soil!
 - Grow more bamboos for Environment protection and Aesthetics!
 - BAMBOOS YOUR FRIENDS FOR LIFE!

Anil Sood









* * : THE BLUE-FRONTED REDSTART : * *

The Blue-fronted Redstart (*Phoenicurus frontalis*) is a species of bird in the Muscicapidae family. Its range includes the northern regions of the Indian Subcontinent and parts of Southeast Asia.



Picture taken Date & time: 25.01.2012 & 11:58:25 Location: Picture taken near Biodiversity Building in CSIR-IHBT Campus. Technical info: ISO-640, F. Number- f/5.6, Focal Length- 300mm, Shutter Speed- 1/800.

Scientific classification

Kingdom: Animalia

Phylum: <u>Chordata</u>

Class: Aves

Order: <u>Passeriformes</u>

Family: <u>Muscicapidae</u>

Genus: <u>Phoenicurus</u>

Species: *P. frontalis*

Binomial name

Phoenicurus frontalis

Picture taken by

Pabitra Gain



* * : WHAT ARE GENES!!!: QUEST OF A CHILD : * *

- We all are keen, to know the gene.
- Everyone has so many cells, and genes are there in all the cells.
- Genes are the factors, which define characters.
- It is due to matter of gene, that flowers are colourful and leaves are green.
- It is decided by the gene, that who shall have brown eyes and who shall have the green.
- Genes make the cucumber cucumber, genes make the timber- timber.
- Genes store genetic information, and passes to next generation.
- Genes make the proteins to work.
 Proteins work the life to work.
- Gene are there in every cell
 You will be tall or short genes will tell.

Dr. Som Dutt







Animals chare calways ebeen cour friends. We knew cabout epet canimals, but cincthese cholidays I was camaged to case chow fisher can be useful tows. Not only cas Good, they cando wonders with our skin. I want to share my experience calcut doctor Fish which I saw in Hyderabad others cholidays. This ofish calso called Gravea Rufa coriginated from Middle East This fish mibbles coff the idead wells on the upper surface of the skin of the feet Its natural sprocedure for explotion cof idead skin coauses blood circulation in the speet It is very useful natural epedicure chy edoctor Fish. This experience forces us to explore the useful mess of canimals ofor us. SOUMIL www.pall.com/green





अब जो मिला राहों में पत्थर कहीं, तो पूछूंगीं उससे क्यों तू रोता नहीं !

> ना जाने कितनी चोट देती है दुनिया तुझे, क्यों फिर भी तुझे हर चोट पे दर्द होता नहीं ?

ना तू अश्क बहाता है, ना ख़ुशी में हंसता है, क्यों तुझे कोई एहसास भिगोता नहीं ?

हर कोई तुझमें अपना स्वार्थ ढूंढता है, क्यों तेरा स्वाभिमान कभी डोलता नहीं ?

माना ये दुनिया बहुत बड़ी है, लेकिन अस्तित्व तेरा भी छोटा नहीं !

> ना तू शिकवा करता है, ना शिकायत, क्या कोई गम तेरे दिल को छूता नहीं ?

बन गई हूँ पत्थर मैं भी कुछ तेरी तरह, अब दर्द पर लगा महलम भी टिकता नहीं !

> शायद आज तक मैं कभी जगी नहीं, या फिर खामोश दिल मेरा कभी सोया नहीं!

> > रीना शर्मा



* * : मैं **डरता हूँ** : * *

में जानता हूँ शायद कुछ - कुछ तुम्हें पर और जानने से डरता हूँ मैं सोचता हूँ हर पल तुम्हें पर समझने से डरता हूँ कहीं तुम वो न हए, जो मैंने सोचा कहीं तुम वो न हए, जो मैंने जाना और मेरे दिल ने जैसा तुम्हें माना तो शायद सह न पाऊँगा उस सच को और खो दूंगा अपना वो हसीन ख्वाब दिन रात जो देखा है, इस जीवन की जो रेखा है। आसान नहीं होगा सच पर यकीन करना गर झूठ है इतना हसीं, तो फिर क्या है उसमें कमी बस झूठा ही तो है बाकी तो सब सच है मैं झूठ को सच मानूं, चाहे सच को ही न जानूं तब भी तुम मेरे हो, फिर में क्यों डरता हूँ पर हाँ ये सच है कि मैं डरता हूँ ।

उदित शर्मा





* * : मेरी यादगार पिकनिक : * *

दो हजार तेरह बीत चुका है। लेकिन मैं पहली अप्रैल का दिन नहीं भूल सकती, वह दिन मेरे लिए खास दिन था। उस दिन मैं, मेरी बहनें, मम्मी और शानू दीदी की मम्मी, दीपक भईया की मम्मी, और हमारे दोस्तों को पिकनिक जाना था। हमको नुडल्स के पैकेट लाने थे। हम सारा सामान लेकन मैदान में इकट्ठा हो गए फिर सब पिकनिक के लिए चाँदपुर गए। हमें चाँदपुर के रास्ते में सड़क के किनारे दो मिट्टी के बड़े-बड़े गुम्बद जैसे दिखाई दिए। मम्मी ने बताया कि इसके अन्दर बाँस से चारकोल बनता है। फिर हम जंगल के रास्ते से गए। वहाँ पर एक छोटा सा कुल आया जिसे हमें पार कर छोटी सी चढ़ाई चढ़नी थी। फिर आगे एक खुला मैदान आ गया। जहाँ पर मम्मी ने हमें जिंको के बारे में बताया और पॉलीटनल भी दिखाई। वहाँ पर हमने फल खाए, जूस पिया, ज्ञान बढ़ाया और आगे चले गए। वहाँ पर आगे जाकर गुलाबों का बगीचा आया, वहाँ पर काँटे ही काँटे थे। मम्मी ने बताया कि इन गुलाबों से गुलाब जल बनता है। हम लोग उन काँटों के बीच एक बड़े पत्थर पर बैठने गए, उस पत्थर पर बैठकर फोटो खिंचवाई। फिर आगे जाकर हमने एक जगह ढूँढी, वहाँ सफाई की और टैंट लगाया; और दीदियाँ पानी लेने चली गईं तो हम बच्चे लकड़ियाँ ढूँढने चले गए। हमने लकड़ियों और पत्थरों से चूल्हा बनाया। फिर पतीले पर पानी रखकर उसे चूल्हे पर रख कर आग जलाई, और जब तक मैगी बन रही थी तब तक हम खेल रहे थे। तभी वहाँ एक कुत्ता आया और हमारे साथ खेलने लगा। फिर जब हम मैगी खा रहे थे तब विदूषी दीदी ने बोला "देखो अंकल आए हैं।" हमने पापा से बातें की। फोटो खींची फिर पापा चले गए। फिर हम थोड़ा आगे गए तो खाई के नीचे चाँदपुर गाँव देखा वह बहुत सुँदर था। फिर शाम घिर आई तो हम लोग वापस आ गए। यह पिकनिक हमारी एक यादगार पिकनिक थी।

शैवी उनियान





शैवी उनियान, कक्षा-चार





* * : मेरी मैगी सबकी मैगी : * *



देख प्लेट मैगी का, मन ललचाया रिधि का ।

> त्रिषा बोली मैं भी खाऊँगी, थोड़ी सी अनुष्का को भी दूँगी।

ग्रिताशी बोली, मुझे भी दे दो थोड़ी सी मैगी ।

> विवेक और ऐनी भी खाएँगे, सुपी - सुपी मैगी ।

दो मिनट में पक जाए, सब बच्चों को भाए ।

रिधिमा ठाकुर





































